1942 का भारत छोड़ो आंदोलन और कानपुर का श्रमिक वर्ग

पवन कुमार[1]
डॉ० प्रज्ञान चौधरी[2]

[1]शोधार्थी
[2]एसोसिएट प्रोफेसर,
[1] [2]इतिहास विभाग
दिगम्बर जैन (पी०जी०) कॉलेज,
बड़ौत (बागपत), उत्तर प्रदेश

सारांश

अगस्त 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया गया था। यह आंदोलन पूरे देश में बहुत व्यापक था। सरकार ने स्थिति को बहुत ही सख्ती से और बहुत ही क्रूरता से संभाला। बम्बई इन सभी गतिविधियों का केंद्र था। वहीं संयुक्त प्रांत में श्रमिक आंदोलन का मुख्य केन्द्र कानपुर था। समाज के सभी वर्गों के लोग, विद्वान से लेकर अनपढ़ तक, कॉलेज के छात्रों से लेकर सेवानिवृत्त लोगों तक, मिल–मजदूरों से लेकर उद्योगपतियों तक, सभी आयु वर्ग के पुरुष और महिलाओं ने अपनी जाति, पंथ या रंग के बावजूद शांत भारत आंदोलन में भाग लिया। इस आंदोलन ने औद्योगिक श्रमिकों के लिए अपने उद्धार के लिए लड़ने का सबसे बड़ा अवसर खोल दिया। जब तक वे केवल आर्थिक आधार पर लड़ रहे थे तब तक उनका टुकड़ों–टुकड़ों में दमन हो रहा था। अब उन्हें राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने और अपने उद्देश्यों पर नियंत्रण करने का अवसर मिला। इसके लिए उन्होंने अंग्रेजों को युद्ध सामग्री की आपूर्ति में बाधा डालने के लिए हर संभव प्रयास किये। मिलों, कारखानों, विशेषकर कपड़ा और इंजीनियरिंग में काम करने वाले श्रमिकों ने मिलों में काम बंद करके अपना प्रतिरोध दर्ज कराया। उस समय भी यह कहा गया कि मजदूरों ने अब तक अपनी कई आर्थिक लड़ाइयां सफलतापूर्वक लड़ी हैं और अब उन्हें राजनीतिक लड़ाइयां भी लड़नी चाहिए। निश्चय ही श्रमिकों ने संयुक्त प्रांत सहित सम्पूर्ण भारत में अपनी सहभागिता की।

• भूमिका

अगस्त 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन आरंभ हुआ। 1857 के बाद भारत के स्वतंत्रता संग्राम में यह दूसरी महान घटना है। महात्मा गांधी अद्वितीय उग्रवादी मूड में थे और उन्होंने एक जोरदार कदम उठाने का फैसला किया। वर्धा में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में एक प्रस्ताव पहले ही पारित किया जा चुका था जो भारत में ब्रिटिश राज के तत्काल अंत की मांग करता था। इस प्रस्ताव की पूर्व संध्या पर महात्मा गांधी ने ब्रिटिश सरकार से बिना किसी देरी के भारत छोड़ने के लिए कहा। उन्होंने घोषणा की कि व्यवस्थित व अनुशासित ब्रिटिश अराजकता को जाना चाहिए और इसके परिणामस्वरूप यदि देश में पूर्ण अराजकता हुई, तो वे इसका जोखिम उठाएंगे। प्रत्येक भारतीय को स्वयं को एक स्वतंत्र व्यक्ति मानना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि इस समय केवल जेल जाना पर्याप्त नहीं है। प्रत्येक कार्यकर्ता का आदर्श वाक्य **करो या मरो** होना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस लक्ष्य के लिये यदि आम हड़ताल एक सख्त आवश्यकता बन गई तो वे पीछे नहीं हटेंगे। पूरे भारत में लोग जिनमें श्रमिक वर्ग भी था, इस आंदोलन में शामिल हुए।

संयुक्त प्रांत में कानपुर श्रमिक प्रतिरोध की गतिविधियों का केंद्र था। समाज के सभी वर्गों के लोगों ने, विद्वानों से लेकर अनपढ़ों तक, कॉलेज के छात्रों से लेकर सेवानिवृत्त लोगों तक, मिल मजदूरों से लेकर उद्योगपतियों तक, सभी आयु समूहों के पुरुषों और महिलाओं ने अपनी जाति, पंथ या रंग के बावजूद भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया। लोगों ने किसी भी कीमत पर स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए ब्रिटिश सरकार पर दबाव डालने का फैसला किया। ब्रिटिश सरकार ने तुरंत ही सभी नेताओं को गिरफ्तार करने और जेल में डालने का अभियान शुरू कर दिया। देश के विभिन्न हिस्सों के नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया, इसलिए आंदोलन का नेतृत्व स्थानीय लोगों को सौंप दिया गया। स्थानीय लोगों ने पहल की और इस आंदोलन को सफल बनाया। इस बार गांधीजी ने आरम्भ से ही मजदूरों से आंदोलित होने की अपील

प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रुप में तब की जब गांधीजी ने हर भारतीय से खुद को स्वतंत्र भारत का नागरिक घोषित करने का आह्वान किया है। घोषणा का तात्पर्य था कि हम ब्रिटिश सत्ता को स्वीकार करने के लिए ब्रिटिश कानूनों का पालन करने से इनकार करते हैं। साक्ष्यों के अनुसार 1942 में भारतीय प्रतिरोध का सड़को पर आरम्भ श्रमिकों ने किया था।

1917 की रुसी क्रांति के बाद से श्रमिक पूरे विश्व में नागरिक प्रतिरोध में हमेशा सबसे आगे रहे। गांधीजी ने मजदूरों को संदेश दिया कि उन्होंने अपनी दृढ़ संकल्प शक्ति का परिचय अपनी फैक्ट्रियों से बाहर निकलकर दे दिया है। जब तक ब्रिटिश सत्ता खत्म नहीं हो जाती, तब तक इन फैक्ट्रियों से बाहर रहें और अपने अन्य साथियों को बाहर निकालें जो अभी भी कुछ फैक्ट्रियों में हैं। आपको ज्यादा समय तक बाहर नहीं रहना पड़ेगा और जिन फैक्ट्रियों में आप वापस जाएंगे, वे शोषण की स्मारक नहीं होंगी। ब्रिटिश शासन समाप्त होना चाहिए।

- **भारत का श्रमिक परिदृश्य**

भारत में प्राचीन काल से ही विभिन्न उद्योग चल रहे हैं। ब्रिटिश शासन से पहले भारत के गांव आत्मनिर्भर थे। गांव की जरूरतें गांव में ही पूरी हो रही थीं, इसलिए लोगों की जरूरतें सीमित थीं। महात्मा गांधी ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने के लिए जीवन भर अभियान चलाया। आजादी के बाद बनाए गए खादी और ग्रामोद्योग गांधीजी के विचारों का क्रियान्वयन हैं। ब्रिटिश राज्य की स्थापना के बाद कर वसूली के विभिन्न तरीके लागू किए गए, जिससे कर की राशि भी बढ़ गई। कर न देने वाले किसानों की जमीनें जब्त कर ली गईं और भूमिहीन मजदूर काम के लिए शहर आने लगे। इस समय भारत में बुनकरों का एक बड़ा वर्ग था। विदेशों में भारतीय कपड़े की बहुत मांग थी। 17वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप दुनिया भर में मशीनों से बने सामानों की बाढ़ आ गई। भारतीय उद्योग बंद होने लगे। अंग्रेजों ने भारत में इसलिये उद्योग शुरू किए क्योंकि उन्हें बहुत कम मजदूरी पर मजदूर मिल गए।

1850 से 1870 के बीच 20 वर्षों में भारत में विनिर्माण की नींव रखी गई। ब्रिटिश उद्योगपतियों ने भारत में कारखाने स्थापित किए, जिनमें आम लोगों को मजदूर के रूप में रखा गया, काम के घंटे 15 से 16 घंटे थे, जिनमें महिलाएं और बच्चे भी शामिल थे। उनसे सुबह से शाम तक काम कराया जाता था और उन्हें किसी भी तरह की सुविधा नहीं दी जाती थी। 1884 में नारायण मेघाजी लोखंडे ने ब्रिटिश भारत में मजदूरों को न्याय दिलाने के लिए बॉम्बे एसोसिएशन की स्थापना की। मजदूरों में हो रही जागरूकता के कारण उन्होंने विभिन्न कंपनियों में अपने न्याय के अधिकार की मांग के लिए हड़ताल की। उसके बाद से ये मजदूर लगातार अपनी मांगों के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

- **कानपुर में विभिन्न उद्योग**

मजदूर संगठनों की गतिविधियों के कारण कानपुर एक महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्र के रूप में विकसित हुआ। ब्रिटिश काल में कानपुर उत्तर भारत का सबसे बड़ा औद्योगिक नगर था। बम्बई, कलकत्ता और मद्रास के बाद पूरे देश में उद्योग धन्धों के क्षेत्र में कानपुर का स्थान चौथा था। तीव्र औद्योगिक विकास के कारण तेजी से जनसंख्या में वृद्धि हुई जो 1853 में 1800 से 1911 में एक लाख उन्यासी हजार हो गयी और 1919 में दो लाख सोलह हजार तक हो गयी। कानपुर में आकर बसने वाले ज्यादातर लोगों की संख्या आस पास के गावों की थी जो विशेष रूप से ग्रामीण परिवेश से आये थे। यूरोपियन लोगों ने इनका शोषण किया जिससे इन गरीब, अशिक्षित, साधन विहीन लोगों का जीवन दयनीय हो गया। गांवों में खेती की दयनीय दशा के कारण उनके सामने कोई दूसरा विकल्प नहीं था। इन पूंजीपतियों ने उनकी कमजोरी का पूरा फायदा उठाया। साक्ष्य इस बात को व्यक्त करते है कि प्रथम विश्व युद्ध के आरम्भ होने तक इन कारखानों में कार्य करने वाले श्रमिकों का वेतन बहुत कम था। अकुशल श्रमिकों का वेतन 8 से 10 रूपये के मध्य तथा तथा कुशल श्रमिकों का वेतन 13 से 30 रूपये के मध्य था। निम्न स्तर की मजदूरी के अलावा उन्हें एक दिन में 14 घण्टे तक कार्य करना पड़ता था और फिर भी मालिकों ने कारखानों की दशाओं के सुधार की और कोई ध्यान नहीं दिया। इसके बाद मजदूरों ने यह अनुभव कर लिया कि उनकी दशा में सुधार का एकमात्र रास्ता संगठित रूप से ट्रेड यूनियन मूवमेन्ट को चलाना था। 1917 की रूसी क्रान्ति ने इन श्रमिकों पर गहरा प्रभाव छोड़ा था। श्रमिक आन्दोलन को चलाने के लिए एक समिति गठित की गयी। प्रारम्भ में इस समिति में गणेश शंकर, कामदत्त, मूलचंद घसीटे, कुंजीलाल पाण्डेय, शिव गुलाम गुप्ता और ठाकुर प्रसाद थे। बाद में यही समिति मजदूर सभा के रूप में जानी गयी। 17 जुलाई

1920 को मजदूर सभा का सोसाइटी ऐक्ट के अधीन पहली बार पंजीकरण हुआ था। पंजीकरण के एक वर्ष के भीतर ही सभा को संघर्ष करने का अवसर मिला। नवम्बर 1919 में श्रमिकों की पहली बार हड़ताल हुयी जिसे अपने नियोक्ता के द्वारा शोषण के विरूद्ध विरोध प्रदर्शन के रूप में जाना गया।

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की पुनरावृत्ति न हो, इसके लिए ब्रिटिश सरकार ने अनेकों उपाय किये। उनमें से एक यह था कि देश में रेल और सड़क यातायात का जाल बिछाया जाये ताकि सेना किसी भी विद्रोह को दबाने के लिए तुरन्त वहां पहुंचाई जा सके. ताकि कोई भी चिनगारी ज्वाला न बन सके। इसी क्रम में यह भी आवश्यक था कि भारत में भी भारी उद्योगों की स्थापना हो जिनमें सेना और पुलिस के लिए आवश्यक सामान का उत्पादन हो।

1857 तक ब्रिटिश इण्डिया कम्पनी भारत के कुटीर उद्योगों को, जो कि भारत के उद्योगों की नींव थी, पूर्णतः नष्ट कर चुकी थी। अब अंग्रेजों ने अपना तैयार माल भेजने के साथ ही भारत में पूंजी निवेश करके भारी उद्योग स्थापित करना शुरू किया। इसमें कुछ समय अवश्य लगा क्योंकि उद्योगों की स्थापना हेतु आवश्यक सामग्री, यथा कील से लेकर सीमेन्ट तक ब्रिटेन से आयात हुई। रेलों में पूंजी निवेश के बाद अंग्रेजों ने भारत सर्वप्रथम सूती कपड़ा उद्योग एवं चमड़ा उद्योग की स्थापना की। उत्तर भारत में औद्योगिक विकास के लिए कानपुर को चुना गया। सबसे पहले सन् 1861 में एल्गिन मिल की स्थापना हुई जिसके परिचालन के लिए उसी के पश्चिम में गंगा तट पर बिजली उत्पादन केन्द्र बना। इसके बाद अन्य मिलों की स्थापना का सिलसिला शुरू हुआ। ध्यान देने लायक बात यह है कि उस जमाने में चाहे रेल हो या बिजली या फिर अन्य उद्योग सभी की स्थापना निजी क्षेत्र में अंग्रेजों द्वारा स्थापित लिमिटेड कम्पनियों द्वारा हुई। पूंजी निवेश सीधे लन्दन से शेयरों की बिक्री द्वारा होता था। धीरे धीरे भारत में भी शेयर मार्केट खुल गये और यहां से भी पूंजी निवेश होने लगा जैसे कलकत्ता, बम्बई, मद्रास आदि।

एल्गिन मिल को कानपुर में सूती उद्योग की जननी कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी, क्योंकि इसी से निकल कर कई व्यक्तियों ने अपने प्राप्त अनुभव से कानपुर में अन्य सूती मिलों की स्थापना की। सन् 1874 में म्योर मिल, 1880 में कानपुर कॉटन मिल, 1888 में न्यू विक्टोरिया मिल, 1911 में स्वदेशी काटन मिल, 1921 में जे0के0 काटन मिल्स, 1934 में लक्ष्मी रतन काटन मिल की स्थापना हुई। इसके साथ ही कानपुर में अनेक छोटे बड़े अन्य उद्योग धंधे भी स्थापित हुए। लाल इमली, कूपर एलेन, नार्थ वेस्ट टैनरी तथा कानपुर शूगर वर्क्स इन्हीं दिनों यहां स्थापित हुए। इस प्रकार कानपुर कपड़ा और चमड़ा उद्योग का केन्द्र बन गया और उत्तर भारत का मानचेस्टर (ब्रिटेन में कपड़ा उद्योग का केन्द्र) कहा जाने लगा।

- **1942 का आंदोलन एवं कानपुर का श्रमिक वर्ग**

1942 में बंबई में ग्वालिया टैंक में भारत छोड़ो आंदोलन का आरंभ हुआ। उससे पहले ही फरवरी 1942 में स्वदेशी कॉटन मिल में हड़ताल हो चुकी थी। अमृतबाजार समाचार पत्र ने इस हड़ताल की रिपोर्ट छापी थी, तीन से चार हजार मिल कर्मचारियों ने ईमली मिल रोड इलाके में विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया था। अंधेरा होते ही कर्मचारी काम बंद करने की घोषणा करके विरोध जता रहे थे। इसके अलावा, काम के घंटे, मजदूरी, बाल मजदूरी जैसी विभिन्न मांगों को लेकर भी श्रमिकों ने हड़ताल की। अगर उनकी सभी मांगें नहीं मानी जातीं, तो वे शासन के खिलाफ विरोध जताने के लिए तैयार थे। इस आंदोलन ने औद्योगिक श्रमिकों के लिए अपने उद्धार के लिए लड़ने का सबसे बड़ा अवसर खोल दिया था। रिपोर्ट के अनुसार जब तक वे केवल आर्थिक आधार पर लड़ रहे थे और उन्हें टुकड़ों में बसाया जा रहा था। कांग्रेस ने एक संदेश के जरिये इस वर्ग को संबोधित किया। कांग्रेस के अनुसार अब इस वर्ग ने राजनीतिक स्वतंत्रता हासिल की और अपनी जमीनों पर राज करने का प्रयास किया है। इसके लिए उन्हें अंग्रेजों को युद्ध सामग्री की आपूर्ति को रोकने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। यह सभी मिलों में काम बंद करके किया जा सकता है। खास तौर पर कपड़ा और इंजीनियरिंग की फैक्ट्रियों में। उन्हें तुरंत अपना काम छोड़ देना चाहिए, शहरों को छोड़ देना चाहिए और अपने मूल स्थानों पर जाकर आंतरिक व्यवस्था को सुधारने के लिए पूरा कार्यक्रम अपनाना चाहिए। जो लोग शहरों में और उसके आसपास रहते हैं, उन्हें सभी स्थानों पर जोरदार तरीके से मार्च करना चाहिए, जिसमें परिवहन सेवाओं को बाधित करना शामिल हैं। नागरिक, पुलिस और सेना को सभी प्रकार के उत्पीड़न किए गए हैं। मजदूरों ने अब तक अपनी कई आर्थिक लड़ाइयाँ सफलतापूर्वक लड़ी हैं और अब उन्हें राजनीतिक लड़ाइयाँ भी लड़नी चाहिए।

औद्योगिक क्रांति 16वीं शताब्दी में इंग्लैंड में शुरू हुई और दुनिया भर में फैल गई। भारत में विभिन्न उद्योग स्थापित हो रहे थे। कई विदेशी उद्यमियों ने भारत में अपने उद्योग स्थापित किए थे। वे आम लोगों के बीच मजदूर के रूप में काम कर रहे थे और कई तरह के अन्याय के अधीन थे। इस आंदोलन की घोषणा के तुरंत बाद, इसका विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों पर प्रभाव पड़ा, कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख यहां किया जा सकता है।

8 अगस्त 1942 को महात्मा गांधी ने आंदोलन की घोषणा की। मुंबई इस आंदोलन का मुख्य केंद्र था। इसमें सभी क्षेत्रों के छात्र, वकील, न्यायाधीश, शिक्षित और अशिक्षित मजदूरों ने भाग लिया। ब्रिटिश सरकार ने सभी नेताओं को गिरफ्तार करने का अभियान चलाया। सभी प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार करने से आंदोलन की गति धीमी हो गई, लेकिन बंबई में इसका व्यापक प्रभाव देखा गया। महात्मा गांधी का राष्ट्र के लिए आह्वान – अहिंसा के तहत हर व्यक्ति पूरी तरह से स्वतंत्र है। कानपुर में हड़तालों के माध्यम से पूर्ण गतिरोध लाया गया। कांग्रेस के संदेश के बाद 18 तारीख को 31 कपड़ा मिलें और 15 रेशम मिलें बंद हो गईं। आंशिक रूप से राष्ट्रीय गिरनी कामगार संघ के आयोजकों की जांच और आंशिक रूप से छात्रों की गतिविधियों के कारण यह संभव हो सका था। कुछ मिलों के गेटों पर धरना देने वालों को गिरफ्तार किया गया। अधिकांश मिलें अंगेजों, मारवाड़ी और स्थानीय लोगों के स्वामित्व वाली थीं, जिनमें अंग्रेजों के अलावा अधिकांश मिल मालिक कांग्रेस समर्थक थे। 12 बड़ी और 10 छोटी फैक्ट्रियाँ और 6 धागा मिलें पूरी तरह से बंद हो गईं। एल्गिन, लाल इमली और नार्थ वेस्ट टैनरी मिलों में काम जारी परंतु धीमा था। जे.के. मिल्स, म्योर मिल और कूपर एलेन काम नहीं कर रहे थे। कपड़ा बाजार और भारतीय व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद थे। स्टॉक एक्सचेंज, कॉटन एक्सचेंज, बुलियन एक्सचेंज, कारोबार शुरू करने के लिए इच्छुक नहीं थे। स्कूलों और कॉलेजों में उपस्थिति 10 से 20 प्रतिशत के बीच हो गई थी।

गाँधी की अपील का समर्थन करते हुए, मजदूरों ने हड़ताल कर दी। लेकिन आठ–दस दिन बाद उनके लिए भूख से मरने की नौबत आ गई। मजदूरों की आजीविका कारखाने से मिलने वाले वेतन पर निर्भर थी। इसलिए, लंबे समय तक हड़ताल जारी रखना संभव नहीं था। 17 अगस्त के बाद, कई भारतीय कंपनियों ने धीरे–धीरे काम करना शुरू कर दिया।

28 अगस्त 1942 की सीआईडी की रिपोर्ट में कहा गया कि सभी मिलें और कारखाने ठीक से काम नहीं कर रहे हैं। टेनरी काम नहीं कर रही हैं। यहॉ तक कि सरकारी प्रभाव वाली आयुध निर्माणी में भी विविध काम के लिए लगभग 150 कर्मचारी ही आए। जिन मिलों में काम हो रहा था वे सभी मिलें रात की पारी में ही काम करती थीं क्योंकि दिन के समय श्रमिक या तो आंदोलन में भाग लेते थे या प्रतिरोध स्वरुप कार्य का बहिष्कार करते थे। इस आंदोलन में शामिल होकर वेतन, समय से वेतन भुगतान और अन्य अधिकारों की मांग ने मजदूरों को उनकी गुलामी का एहसास कराया। उन्होंने मालिकाना हक की मांग की।

1942 के आंदोलन में मजदूरों ने बड़ी संख्या में भाग लिया था यद्यपि उसमें सभी क्षेत्र शामिल नहीं थे। जिन मजदूरों ने हड़ताल में भाग लिया, वे अपनी आजीविका के लिए पूरी तरह से मजदूरी पर निर्भर थे। हालांकि आंदोलन के शुरुआती चरणों में मजदूरों ने उत्साह दिखाया, लेकिन वे लंबे समय तक हड़ताल को जारी नहीं रख सके। नेताओं की गिरफ्तारी और आंदोलन की गति कम होने के कारण, क्योंकि लंबे समय तक हड़ताल जारी रखना असंभव था, अतः मजदूरों ने धीरे–धीरे काम करना शुरू कर दिया। भारत छोड़ो आंदोलन में मजदूरों के कई वर्गों ने भाग लिया। गांधी के आह्वान का समर्थन करते हुए, ग्रामीणों से नए कुटीर उद्योग स्थापित करने और आत्मनिर्भर गांव बनाने की अपील की थी। यह लागू नहीं किया जा सका क्योंकि औद्योगिक क्रांति ने बड़े पैमाने पर कारखानों के विकास पर बहुत प्रभाव डाला था। श्रमिकों की आजीविका पूरी तरह से कारखाने की मजदूरी पर निर्भर थी और लंबे समय तक हड़ताल करना असंभव था। उनके लिए भूखे मरने की नौबत आ गई थी। गांव जाकर उन्हें नौकरी नहीं मिलती। कुल मिलाकर मजदूरों ने कारखाने में अपना काम फिर से शुरू कर दिया।

पूर्ण समर्थन के अभाव में और सरकारी दमन के कारण 1942 की क्रांति असफल हो गयी। सरकार ने आन्दोलन को बर्बर ढंग से कुचल दिया। इस आन्दोलन का महत्त्व यही है कि इससे ब्रिट्रिश शासकों के दिमाग में यह बात अच्छी तरह आ गयी कि भारत में उनके साम्राज्यवादी शासन के दिन गिने–चुने रह गये हैं। स्वतंत्रता अब सौदे की बात नहीं

थी, बल्कि अब भविष्य में होने वाला कोई भी समझौता सिर्फ सत्ता हस्तांतरण के तरीके के बारे में होना था। भारत छोड़ो आन्दोलन इस दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है कि इसने विदेशों में भारत पक्षीय जनमत को प्रबल बनाया। उदाहरणस्वरूप चीन के प्रधान च्यांग काइ शेक ने अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट को लिखा कि "अंग्रेजों के लिए सबसे श्रेष्ठ नीति यही है कि भारत को पूर्ण स्वतंत्रता दे दें." रूजवेल्ट ने यही बात चर्चिल से कही। इस आंदोलन के परिणामस्वरूप, ब्रिटिश सरकार को जल्द ही भारत छोड़ने का फैसला लेना पड़ा।

संदर्भ

1. प्रसाद, अंबा एवं प्रसाद, अनिरुद्ध, 1942 का भारतीय विद्रोह, एस.चंद ऐंड कम्पनी, दिल्ली, 1958,
2. फ्रांसिस जी. हचिन्स, स्पॉन्टेनियस रिवोल्यूशन : द क्विट इंडिया मूवमेंट, मनोहर बुक्स, नई दिल्ली, 1971
3. सहाय, गोविंद, 42 रेबेलियन : ऐन आथेंटिक रिव्यू ऑफ द ग्रेट अपहीवेल ऑफ 1942, राजकमल पब्लिकेशंस, दिल्ली, 1947
4. चोपड़ा, पी. एन., क्विट इंडिया मूवमेंट, पब्लिकेशंस डिवीजन, नई दिल्ली, 1988
5. मुखर्जी, गिरिजा कुमार, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का इतिहास (1932–1947), मेरठ प्रेस, मेरठ, 1974.
6. मुखर्जी, हिरेन, गांधीजी : एक अध्ययन, नेशनल बुक एजेंसी प्राइवेट लिमिटेड, कलकत्ता 1958.
7. भट्टाचार्य, भबानी, महात्मा गांधी, अर्नोल्ड हेनमैन, नई दिल्ली, 1977.
8. बिमल प्रसाद (सं.), एक क्रांतिकारी खोज, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 1980.